प्रातःक्लास पिताश्री ओमशांति मधुबन 31–7–67

ओमशांति। मीठे2 रुहानी बच्चे यह जानते हैं कि अभी हम विश्व के मालिक बनने लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। भल माया....यह भी भुलाय देती है। कोई2 को तो सारा दिन भुलाय देती है। कब याद ही नहीं करते, जो खुशी भी हो। हमको भगवान पढ़ाते हैं यह भी भूल जाते हैं। भूल जाने कारण कोई सर्विस नहीं कर सकते। रात को बाबा ने समझाया अधम ते अधम जो वैश्यायें हैं उनकी सर्विस करनी चाहिए। तुम ऐलान करो कि तुम वैश्या से स्वर्ग की विश्व की महारानी बन सकती हो। साहुकार लोग नहीं बन सकते हैं। आजकल उन्हों का कैसा चलता है बाबा को मालूम नहीं है। जो जानते हैं ,पढ़े–लिखे हैं वे प्रबंध करेंगे उन्हों को उठाने का तो बिचारी बहुत खुश होंगी ;क्योंकि वह भी अबलायें हैं। उनको तुम समझाय सकते हो। युक्तियां तो बहुत बाप समझाते रहते हैं। बोलो तुम ही उंच ते उंच से नीच ते नीच गिरे हो। तुम्हारे नाम से ही भारत वैश्यालय बना है। फिर तुम शिवालय में जाय सकती हो यह पुरुषार्थ करने से। तुम अभी पैसे के लिए कितना गंदा काम करती हो। अब यह छोड़ो। समझाने से वह बहुत खुश होंगे। तुमको कोई रोक नहीं सकते। यह तो सच्ची बात है ना। गरीबों का है ही भगवान। पैसे के कारण बहुत गंदी काम करती हो। उन्हों का जैसे धंधा चलता है। अभी बच्चे कहते हैं आकर युक्तियां निकालेंगे सर्विस कैसे वृद्धि को पाये। बाबा छुट्टी दे देवें तो ढेर आ जाये। कोई फिर रूठ भी पड़ते हैं। रूठ कर अपना बेड़ा गर्क करते हैं। ऐसे गर्म मिजाज वाले भी हैं। पढ़ाई भी छोड़ देते। यह नहीं समझते हम नहीं पढ़ेंगे तो अपना ही बेड़ा गर्क करेंगे। रूठ कर बैठ जाते हैं। फलाने ने यह कहा ,ऐसे कहा इसलिए आते नहीं। हफ्ते में एक बार मुश्किल आते हैं। बाबा तो मुरलियों में कब कोई राय ,कब कोई राय देते रहते हैं। सुनना तो चाहिए ना। क्लास में आवेंगे तो सुनेंगे। ऐसे बहुत हैं कारणे–अकारणे बहाना बनाये सो जावेंगे। अच्छा,आज नहीं जाते हैं। अरे,बाबा ऐसी अच्छी2 प्वाइंट सुनाते हैं। सर्विस करेंगे तो उंच पद भी पावेंगे। पैसे से भी सर्विस होती है। भक्तिमार्ग में तो साधुओं आदि खूब पेट भरता है। वह उन्हों का जैसे धंधा है। यह तो है पढ़ाई। उन यूनिवर्सिटियों में शास्त्र बहुत पढ़ते हैं। दूसरा कोई धंधा न होगा तो बस शास्त्र कंठ कर सतसंग शुरू कर देते हैं। उनमें उद्देश्य आदि तो कुछ भी नहीं है। इस पढ़ाई से तो सबका बेरा(बेड़ा) पार हो जाता है। वानप्रस्थ में बहुत करके सतसंग आदि में लग जाते हैं। आजकल तो तमोप्रधान होने कारण वानप्रस्थी भी अपने पोत्री–पोत्रों आदि में विकारी कुल की मर्यादा,लोकलाज में फंसे रहते हैं। बच्चे को शादी करानी है। नहीं तो ग्लानी होगी। जोरी भी शादी कराय देती है। कोई2 बच्चियां भी बहुत गंदी होती है। तकदीर में नहीं। कालेज में गईं और सत्यानाश हुईं। बाबा ने समझाया है आंख बड़ी धोखेबाज है। कोई अच्छा आदमी देखा ,बस लटक पड़ेंगी। आंखों को बड़ा सम्भालना पड़ता है। इस समय तो अंधा हो तो बेहतर हैं। अंधों को पता नहीं पड़ता है। इस दुनियां में तो जो सजे हैं उनको भी अंधा कहा जाता है। गीता में भी है ना अंधे के औलाद अंधे हैं अर्थात् ज्ञान का तीसरा नेत्र नहीं है। तो तुम बच्चों को ऐसे2 अधम की सर्विस करनी है। तुम्हारे पास मच्छी मयानी भी आ जाते हैं। साहुकार लोग देखेंगे यहां ऐसे2 आते हैं तो उनको यहां आने दिल नहीं होगी। लज्जा आवेगा। अच्छा ,उन्हों को भी ये स्कूल खोल दो। वह पढ़ा है तो है पाई पैसे की शरीर निर्वाह अर्थ। यह तो है 21जन्म लिए। कितने का कल्याण हो जावेगा। अक्सर करके माताएं ही पूछती हैं बाबा घर मे गीतापाठशाला कर दें?पुरुष लोग तो इधर–उधर क्लबों आदि में खूब घूमते हैं। साहुकार के लिए तो जैसे कि यहां ही स्वर्ग है। बड़े मौज में रहते हैं। शादी करते हैं तो जैसे परियों का परिस्तान बन जाता है। देवताओं की नैचुरल ब्यूटी देखो कैसी है। कितना फर्क है। आजकल तो झूठे जेवर आदि ही ऐसी पहनते हैं जो सच्चे हीरों से भी जास्ती चमकती है। यहां तुमको सच्च सुनाया जाता है तो कितने .....आते हैं। सो भी गरीब और जहां झूठ चमकता है वहां कितनी मैजॉरिटी जाती है। उस तरफ झट चले जाते हैं। वहां भी सिंगार आदि करके जाते हैं। गुरू लोग विकार में जाने लिए सगाई

भी करते हैं। यहां किसकी सगाई की जाती है बचाने लिए। काम चिक्षा पर चढ़ने से बच जाये। ज्ञान चिक्षा पर बैठने से पदम भाग्यशाली बन जाये। बहुत अधिक धन मिलता है। कहा जाता है चलो स्वर्ग में। तो कहते हैं क्या करें यह सब हमारे उपर नैलत डालेंगे कि कुल का नाम बदनाम करते हो। शादी न कराना कायदे के बरखिलाफ है। लोकलाज कुल की मर्यादा छोड़ते नहीं हैं। एकदम अकल ही चट हो जाता है। भक्तिमार्ग में गाते भी हैं –मेरा तो एक दूसरा न कोई। मीरा की भी गीत है ना। फिमेल्स में मीरा नम्बरवन है। मेल्स में नारद भक्ति गाया हुआ है। नारद की भी कहानी है ना। तुमको कोई नया आदमी कहे मैं लक्ष्मी को वर सकता हूँ?बोलो अपने को देखो। लायक हो या बंदर हो?नारद को भी कहा ना तुम अपनी सिकल तो देखो आइने में। हो सकता है बंदर के शिकल भी देखे हो। ड्रामा में यह भी हो तो .....नहीं है। अभी तुम खुद भी कहेंगे हम बंदर से भी बदतर थे। जिसमें बाबा ने प्रवेश किया है। यह भी कहते हैं हम बंदर से भी बदतर विकारी थे। यह जन्म करके अच्छा रहा है। अगले जन्म में पता नहीं क्या किया। पतित तो बने हैं ना। बाप कहते हैं तुम सब बंदर मिसल थे। सूरत मनुष्य की,चलन बंदर की थी। इनसे भी बदतर कहें। जनावर के बच्चे कब अपने मां–बाप से झगड़ा आदि नहीं करेंगे। यहां तो देखो बच्चे मां–बाप से भी लड़ पड़ते हैं। बड़ा तंग करते हैं। यह....दुनियां है ना। अब बाप आये हैं सबको सुखी बनाने। यहां बाबा के पास आते हैं प्रतिज्ञा करते हैं। बाबा अब हम पवित्र रहेंगे,गोद में लिया फिर बाहर में आकर गटर में गिरते हैं। ऐसे2 समाचार बाबा के पास आते हैं। बाबा कहते हैं ऐसे2 को जो ब्राह्मणी ले आते हैं उनके उपर भी असर पड़ जाता है। इंद्र सभा की कहानी भी है ना। तो ले आने वाले पर भी डंड पड़ जावेगा। बाबा ....ब्राह्मणियों को हमेशा कहते हैं बच्चे2 को मत ले आओ। तुम्हारी अवस्था भी ढरक पड़ेगी ;क्योंकि बेकायदे ले आते हैं ना। अच्छी2 महारथी न होने के कारण फिर छोटे2 को भी सेंटर पर भेज देना पड़ता है। वास्तव में ब्राह्मणी बनना है बहुत सहज। 10/15 दिन में भी बन सकती है। बाबा किसको भी समझाने की बहुत सहज युक्ति बताते हैं। तुम भारतवासी आदि सनातन देवी देवता धर्म के थे। स्वर्गवासी थे। अब नर्कवासी हो। फिर स्वर्गवासी बनना है। तो यह विकार छोड़ो। सिर्फ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो जाये। कितना सहज है ;परंतु पत्थर बुद्धि बिल्कुल समझते ही नहीं। खुद भी नहीं समझते तो और को क्या समझावेंगे। वाणप्रस्थ अवस्था में भी मोह की रग लटकी रहती है। आजकल वाणप्रस्थ अवस्था में इतने नहीं जाते हैं। तमोप्रधान हैं ना। यहां ही पैसे रहते। आगे वाणप्रस्थियों की .....आश्रम थे। आजकल इतने नहीं हैं। 90वर्ष के हो जाते हैं तो भी घर को नहीं छोड़ते। समझते ही नहीं हैं वाणी से परे जाना है। अब एक ही ईश्वर के शरण में जाना है। उनको ही याद करना है। भगवान कौन है यह भी नहीं जानते सर्वव्यापी कह देते। तो याद किसको करें?कितना तमोप्रधान हैं। यह भी नहीं समझते हम पुजारी है। .....शंकराचार्य जैसे भी पूजा करते हैं। सो भी नम्बरवन शंकराचार्य। वह भी शिव की पूजा करते हैं। तो उनको पूज्य कह कैसे सकते?पुजारी को फिर नमन क्यों करना चाहिए?यह भी अकल नहीं है। बाबा को बहुतों ने कहा था हम शंकराचार्य को समझावेंगे तुमको पूज्य कैसे कह सकते हैं। जबकि तुम पुजारी हो। पुजारी के चरणों में तो गिरना न चाहिए। बड़े2 गुजराती लोग उन्हों के पास जाते हैं। नमन करते हैं। तो बाबा ने शंकराचार्य के लिए समझाया था ;परंतु कोई में ताकत नहीं योग की। इसलिए काम कर नहीं सकते। आंखें इतना धोखा देती हैं बात मत पूछो। कोई की अच्छी टिकलू2 सुनी तो बस उन पर फिदा हो जाते। फिर कुछ कहो तो बिगड़ पड़ते। यह नहीं समझते हम बिगड़ते हैं। अपना ही नुकसान करते हैं। राजाई तो स्थापन होनी ही है ना। इसलिए बाबा ने समझाया है आंखें ही हर हालत में धोखा देती हैं। इन पर जापता चाहिए। बुद्धि में यह रखनी चाहिए यह पुरानी दुनियां तो खतम होनी ही है। अभी हमको जाना है घर। बस, यही

तात रहे। वहां क्रिमिनल बात होती ही नहीं। बाप आय उस पवित्र दुनियां के लिए तैयार करते हैं। इस पढ़ाई में तो ऐसे भी हैं जो 2मार्क्स भी मुश्किल उठाय सके। बहुत झूठ पाप करते रहते। देखने को भी दिल नहीं होती। सर्विसेबल लाडले बच्चे को तो नयनों पर बिठाय ले जाते हैं। अज्ञानकाल में कोई ऐसे बच्चे होते हैं तो कहते हैं यह मुआ भला। बड़ा बाबा भी कहते हैं इन्होंने जन्म ही क्यों लिया?तो अधमों का उद्धार करने लिए बड़ा बहादुर चाहिए। उस गवर्मेंट में तो बड़े2 झुंड होती है। टिप–टॉप रहती है। पढ़े–लिखे यहां तो अहिल्यायें ,कुब्जायें,भीलनियां हैं। उनको बाप बैठ उंच उठाते हैं। थोड़े होशियार होते हैं तो बस फिर किसका नाम लिया जाता है तो आग लग जाती है। फलाने को सेमिनार में बुलाया है,हमको क्यों नहीं?अरे, तुम अपनी सर्विस करते रहो। बुलावें न बुलावें इस तुमको क्यों होता है?बाप को आधा कल्प से बुलाया है हे पतित–पावन आओ। अब आये हैं तो चलन कैसे चलते हैं। झूठ बिगर तो चल नहीं सकते। ऐसे भी हैं बात मत पूछो। अज्ञानकाल में बाबा के पास दरबान भी बड़े इमानदार होते थे। सब समान खोलकर जाते थे। वेतन अच्छा मिलता था। खर्चे आदि भी मिलते थे। ..... खुश रहते थे। यहां बाबा कितना सम्भालते हैं। कहां गटर में चले जायें ;परंतु कोई2 पर बिल्कुल असर ही नहीं होता। चलन भी बड़ी रॉयल चाहिए। भगवान पढ़ाते हैं उस पढ़ाई में भी कोई बड़ा इम्तहान पास करते हैं तो कितना टिप–टाप हो जाता है। यहां तो बाप गरीब निवाज है। गरीब ही कुछ न कुछ भेज देते हैं। एक/दो पैसे का भी एम.ओ. भेज देते हैं। बाप कहते हैं तुम तो महान सौभाग्यशाली हो। रिटर्न में बहुत मिल जाता है। यह भी कोई नई बात नहीं। साक्षी हो सब देखते हैं। बाप कहते हैं बच्चे,अच्छी रीति पढ़ो। यह ईश्वरीय यज्ञ है। जो चाहिए सो लो। स्वर्ग में तो सब कुछ मिलना है। फिर भी खुश नहीं रहते। समझते नहीं। वे क्या सर्विस करेंगे?बाबा को तो सर्विस बड़ी फुर्त चाहिए। स्वदेश जैसे। मोहिनी जैसे फिक्र हो। तुम्हारा नाम बहुत बाला हो जावेगा। फिर तुमको बहुत मान देंगे। बाबा सब डायरैक्शन देते रहते हैं। बाकी यहां सब आय क्या करेंगे?बाबा तो कहते हैं यहां बच्चों को जितना समय मिले याद में रहो। इम्तहान के दिन जब नजदीक होती है तो एकांत में जाय पढ़ते हैं। प्राइवेट टीचर भी रखते हैं। हमारे पास टीचर तो बहुत हैं। सिर्फ पढ़ने का शौक हो। माया ऐसी है जो एकदम बुद्धि खराब कर देती है। समझते नही हम अपना कल्याण नहीं करते तो औरों का क्या करेंगे?अपने उपर रहम नहीं करते। बाप तो बहुत सहज समझाते हैं। सिर्फ अपन को आत्मा निश्चय करो। यह शरीर तो विनाशी है। तुम आत्मा अविनाशी हो। यह ज्ञान एक ही बार मिलता है। फिर सतयुग से लेकर कलियुग अंत तक किसको मिलता नहीं। तुमको ही मिलता है। हम आत्मा हैं यह पक्का निश्चय कर लो। बाप से हमको वर्सा लेना है। बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगी। बस। यह अंदर रटते रहो तो भी बहुत कल्याण हो सकता है ;परंतु चार्ट रखते ही नहीं। लिखते2 फिर थक जाते हैं। बाबा बहुत सहज कर बतलाते हैं। हम आत्मा सतोप्रधान थी। अब तमोप्रधान बना हूं। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। कितना सहज है। फिर भी भूल जाते हैं। यह एक सिर्फ पाठ देता हूं। जितना समय बैठो अपन को आत्मा समझो। मैं आत्मा बाबा का बच्चा हूं। बाप को याद करने से स्वर्ग की बादशाही मिलेगी। कितना सहज युक्ति बतलाते हैं। सभी बच्चे सुन रहे हैं। बाबा खुद प्रैक्टिस करते हैं तब तो सुनाते हैं ना। मैं बाबा का रथ हूं। बाबा मुझे खिलाते हैं। तुम बच्चे भी ऐसे समझो शिवबाबा के रथ को मालिश करते हैं। उसने लोन लिया है। शिवबाबा को ही याद करते रहो तो कितना फायदा हो जाए ;परंतु भूल जाते हो। बहुत सहज है। धंधे में कोई ग्राहक नहीं है। अच्छा ,याद में बैठ जाओ। मैं आत्मा हूं। बाबा को याद करना है। बीमारी में भी याद कर सकते हैं। बांधेली है,वहां बैठे तुम याद करते रहो। तुम 10/12 वर्ष वालों से भी उंच पद पाय सकते हो। अच्छा, रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बाप का यादप्यार बाद गुडमार्निंग।